

| | | | |
|---|----------|-------------------|-----------------------|
| यत्र | पंक्ति ॥ | अशुद्ध | शुद्ध |
| ६६ | ४ | • | क्ष्वेडानुसिंहनादेस्य |
| त्करिणां घटानां घटा । क्रन्दनयोधसंखेव वृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥ | | | |
| ६७ | १० | नियमा | निमया |
| ७१ | २ | तक्रंदधिघृते | तप्संदधिघने |
| ७३ | ३ | वस्तो | वस्तो |
| ८० | ८ | निर्द्धार्यः | निर्वाय्यः |
| ८१ | १५ | क्षान्ता | क्षन्ता |
| ८२ | १ | देवद्रुद्धिष्वद्र | देवद्रुद्धिष्वद्र |
| ८२ | २ | सध्रुत्स | सध्रुत्स |
| ८२ | ९ | दपध्वस्तु | दपध्वस्तु |
| ८२ | ९ | स्याद्दपितः | स्याद्दपितः |
| ८२ | १५ | काश्यः | काश्यः |
| ८३ | ३ | निस्वस्तु | निःस्वस्तु |
| ८३ | ९ | नात्यन्तो | नास्त्यन्तो |
| ८४ | १५ | नतम् | नते |
| ८४ | १७ | शाम्बतस्तु | शाम्बतस्तु |
| ८६ | ४ | गूठ | गूठ |